आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received: 27/02/2023; Accepted: 1/03/2023; Published: 24/03/2023

अनुवाद रचना और संरचना

- सौम्यश्री हेच.डी.
सहायक प्रोफ़ेसर
सुराणा कालेज, साउथेंड सर्कल ,बैंगलोर
मोबाइल:9019807491
ई मेल :-sowmyashree.hd@suranacollege.edu.in

सौम्यश्री हेच.डी, **अनुवाद रचना और संरचना**,आखर हिंदी पत्रिका,खंड 3/अंक 2/मार्च 2023,(160-162)

संस्कृत के " वद " धातु से 'अनुवाद ' शब्द का निर्माण हुआ है । 'वद' का अर्थ है "बोलना"।'वद' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रुप है 'वाद' जिसका अर्थ है- 'कहने की क्रिया 'या' कही हुई बात।'वाद ' में अनु उपसर्ग जोडकर 'अनुवाद' शब्द बना है,जिसका अर्थ है , प्राप्त कथन को पुन: कहना । इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियास ने अँग्रेज़ी शब्द टांसलेशन के पर्याय के रुप में किया । इसके बाद ही 'अनुवाद ' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुन: प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया । किसी भाषा में अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथावत प्रस्तुत करना अनुवाद है । इस विशेष अर्थ में ही 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है । जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है , वह मूलभाषा या स्त्रोतभाषा है ।

उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है , वह प्रस्तुत भाषा या 'लक्ष्य भाषा ' है । इस तरह स्त्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है । अनुवाद असाधारण रुप से कठिन और आह्वानात्मक कार्य माना जाता है । यह एक जटिल , कृत्रिम, आवश्यकता – जनित और एक दृष्टि से सर्जनात्मक प्रक्रिया है जिसमें असाधारण और विशिष्ट कोटि की प्रतिभा की आवश्यकता होती है । यह इसकी अपनी प्रकृति है । परन्तु माना जाता है कि मौलिक लेखक न होने के कारण अनुवाद को सम्मान का स्थान नहीं मिलता है । क्योंकि इस बात की अवगणना होती है कि अनुवाद इसीलिए कठिन है कि वह मौलिक लेखन नहीं – पहले कही गई बात को ही दुबारा कहना होता है, जिसमें अनेक नियंत्रणों और बन्धनों का पालन करना आवश्यक हो जाता है । अनुवाद की परम्परा बहुत पुरानी है। बेबल के मीनार की कथा प्रसिद्ध ही है , जो इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि मानव समाज में अनेक भाषाएँ बोली जाती है । यह तर्कसंगत रुप से अनुमान किया जा सकता है कि पारस्परिक सम्पर्क की सामाजिक अनिवार्यता के कारण अनुवाद व्यवहार का जन्म भी बहुत पहले हो गया होगा । परन्तु जहाँ तक लिखित प्रमाणों क सम्बन्ध है । बीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया है । यद्यपि अनुवाद सबसे

प्राचीन व्यवसाय या व्यवसायों में से एक कहलाता है । आदमी की सबसे मुख्य पहचान उसकी बोलने की शक्ति है । वह अपने मन के सुख – दु:ख की बात दूसरों को बता सकता है । इसका माध्यम है भाषा।अगर संसार के समस्त लोग एक ही भाषा बोलते तो सभी एक – दूसरे की बातें आसानी से समझ लेते; मगर प्रत्येक देश में अनेक भाषाएँ होती है । हर राष्ट्र की एक प्रमुख राष्ट्र – भाषा होती है ; अन्य कई भाषाएँ भी वहाँ बोली जाती है । सवाल उठता है कि जब दो भिन्न भाषा – भाषी सज्जनों को आपस में वार्तालाप करना पडता है तब कौन – सा उपाय किया जाय ? इसका कारगर उपाय अनुवाद है । दोनों भाषाएँ जाननेवाला तीसरा आदमी उन दोनों लोगों की बातें बारी – बारी से अनूदित करके सुनाता है । अनुवाद की गुणवत्ता में अब वृद्धि हुई है । अनुवाद की प्रासंगिकता अब बहुत बढी है । विज्ञान , प्रौद्योगिकी , साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद की जरुरत पडती है । अतएव अनुवाद और अनुवादक अब बहुत चर्चित है। अनुवाद के सिद्धांतपक्ष में नए ग्रंथ लिखे जाते हैं । व्यावहारिक पक्ष में अनुवाद बराबर किया जाता है , पर उतर सिद्धांत तक हमें ले चलते है । कालिदास की मुख्य रचनाएँ – शाकुंतलम और मेघदूतम – भारत की सभी आधुनिक भाषाओं में अनूदित की गई है । वे युरोप की अंग्रेज़ी , फ्रांसीसी , जर्मन , रुसी आदि भाषाओं में भी अनुवाद की गई है । एक ही भारतीय भाषा में इनके अनेक अनुवाद मिलते है । मलयालम में करीब चालीस लोगों ने शाकुंतलम का अनुवाद किया है ।प्रकृति के नियम के अनुसार इनमें दो – तीन अनुवादों को छोडकर शेष सब विस्मृति में लीन हो चुके है ।अब इसको प्रकृति का नियम कहकर छोड देना वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं हो सकता । इसके कारणों पर गहरा विचार करना चाहिए । सबसे सरल कारण यह दिया जाएगा कि पाठकों ने इन्ही को अधिक पसंद किया है । जो पाठकों के द्वारा स्वीकृत होता है उसी का प्रचार होता है । भाषा यादृच्छिक ध्वनि – प्रतीकों की संरचनात्मक व्यवस्था है । भाषा – संरचना का मूलाधार संरचनात्मक पद्धति है । जिस प्रकार भवन – रचना में ईंट, सीमेंट, लोहा, शक्ति अर्थात मजदूर और कारीगर की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार भाषा – संरचना में ध्वनि, शब्द , पद , वाक्य , प्रोक्ति और अर्थ की अपनी -अपनी भूमिका होती है ।ध्वनि – संरचना में सामान्यत: किन्ही दो या दो से अधिक वस्तुओं के आपस में टकराने से वायु में कंपन होता है । जब यह कंपन कानों तक पहुँचता है,तो इसे ध्वनि कहते है। भाषा विज्ञान में मानव के मुखागों से निकली ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है । ध्वनि भाषा की लघुतम, स्वतंत्र और महत्वपूर्ण इकाई है । भाषा की स्वतंत्र , पूर्ण सार्थक , सहज इकाई को वाक्य कहते है । वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कम से कम एक आना क्रिया का होना अनिवार्य है ।

वाक्य संरचना में मुख्यत: उद्धेश्य तथा विधेय दो भाग होते है; यथा – 'मोहन जा रहा है "में" "मोहन" उद्धेश्य और "जा रहा है, "विधेय" है । वाक्य में उद्धेश्य छिपा भी सकता है ; यथा – जाओ (तुम) जाओ (आप)खाइए।यहाँ प्रथम वाक्य – संरचना में' जाने देने ' की भावाभिव्यक्ति हैं; वाक्य को संरचनात्मक आधार पर सरल , संयुक्त और मित्र वर्गों में विभक्त कर सकते हैं । मनुष्य एक सामाजिक प्रणी है । समाज में रहते हुए उसे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए एक – दूसरे पर निर्भर रहना पडता है । एक-दूसरे के

साथ विचारों का आदान – प्रदान करने के लिए , एक - दूसरे को अपनी आवश्यकताएँ बताने के लिए और उन को पूरा करने के लिए ; वह जिस माध्यम का प्रयोग करते हैं वह भाषा ही है।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

१. एन .ई . विश्वनाथ अय्यर

२. अनुवाद ई .ज्ञानकोश

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका – कैलाश नाथ पाण्डे

४. अनुवाद - कला और समस्याएँ – भोलानाथ तिवारी

५. अनुवाद सिद्धांत में शोध के लिए ब्रिसलिन,१९७६

****